

पद चालीस का गुप्त इतिहास - संख्या बत्तीस

यहेजकेल संख्या तेरह

Jeff Pippenger

2026-10-02

यहेजकेल की पुस्तक में चेतावनी का संदेश “घेराबन्दी का चिन्ह” है। जब घेराबन्दी आरम्भ हुई, तब यहेजकेल की पत्नी मर गई, और यहेजकेल को आज्ञा दी गई कि वह उसकी मृत्यु पर विलाप न करे। उसकी मृत्यु, और उसके साथ उसकी मृत्यु पर यहेजकेल के विलाप न करने ने, घेराबन्दी और यरूशलेम के निकट आते विनाश का प्रतीकत्व किया। उसके कर्म और उसकी मृत्यु एक चेतावनी-चिन्ह का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो यीशु द्वारा स्थापित भविष्य के एक चेतावनी-चिन्ह का पूर्वरूप है, अर्थात् “उजाड़ने वाली घृणित वस्तु।”

इसलिये जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को, जिसका उल्लेख दानियेल भविष्यद्वक्ता के द्वारा किया गया है, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। मत्ती 24:15.

जब रोमी ध्वज-चिह्न मंदिर के प्रांगणों के भीतर स्थापित किए जाएँ, तब यरूशलेम के मसीहियों को नगर से भाग जाना था। यरूशलेम के विनाश के चिन्ह के दो साक्षी, घरे जाने से पहले उस ‘चिन्ह’ को पहचान लेने की गंभीरता पर बल देते हैं, और प्रेरणा आगे यह भी स्पष्ट करती है कि वे दो साक्षी अंतिम दिनों में अपना “अधिक प्रत्यक्ष अनुप्रयोग” पाते हैं। यहेजकेल और यूहन्ना के मंदिर-दर्शन के संबंध में यरूशलेम के विनाश के विषय में मसीह की चेतावनी का उल्लेख करते हुए, सिस्टर व्हाइट ने लिखा:

“यद्यपि इन भविष्यवाणियों की आंशिक पूर्ति यरूशलेम के विनाश के समय हुई थी, तथापि उनका अधिक प्रत्यक्ष अनुप्रयोग अंतिम दिनों पर होता है।

“हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज़ पर खड़े हैं। भविष्यवाणी तीव्र गति से पूरी हो रही है। प्रभु द्वार पर हैं। शीघ्र ही हमारे सामने ऐसा काल खुलने वाला है जो सब जीवित लोगों के लिए अत्यंत गहन रुचि का होगा। अतीत के विवाद फिर से जीवित किए जाएँगे; नए विवाद उत्पन्न होंगे। जो दृश्य हमारे संसार में घटित होने वाले हैं, उनका अभी तक स्वप्न में भी विचार नहीं किया गया है।” टेस्टिमनीज़, खंड 5, 753.

चौथे अध्याय में, यहेजकेल को एक दृष्टान्त का अभिनय करने की आज्ञा दी गई थी, जो ‘घेराबन्दी के चिन्ह’ पर बल दे रहा था। यहेजकेल ने अपनी पुस्तक में पाँच बार एक दृष्टान्त का अभिनय किया, जिसे उसके भाइयों ने देखने से इन्कार किया। यहेजकेल ने पाँच बार अपने भाइयों से कहा, और उन्होंने सुनने से इन्कार किया। उसके अभिनीत दृष्टान्त और संदेश उन मूर्ख कुंवारियों के पाँचगुने वर्ग को चित्रित करते हैं, जो उसके दृष्टान्तों और वचनों से सम्बन्धित ‘ज्ञान’ की वृद्धि को ग्रहण करने से इन्कार करती हैं। वे वचन और दृष्टान्त यरूशलेम के विनाश से प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध थे, जिसका “अन्तिम दिनों पर और भी अधिक सीधा अनुप्रयोग” है।

हे मनुष्य के पुत्र, तू भी एक ईंट ले, और उसे अपने सामने रख, और उस पर नगर, अर्थात् यरूशलेम, अंकित कर। और उसके विरुद्ध घेरा डाल, और उसके विरुद्ध गढ़ बना, और उसके विरुद्ध टीला खड़ा कर; उसके विरुद्ध छावनियाँ भी स्थापित कर, और चारों ओर उसके विरुद्ध मेढ़-भेदी यंत्र लगा। फिर तू अपने लिए एक लोहे की तवा ले, और उसे अपने और उस नगर के बीच लोहे की दीवार ठहरा; और अपना मुख उसके विरुद्ध कर, तब वह घिर जाएगा, और तू उसके विरुद्ध घेरा डालेगा। यह इस्राएल के घराने के लिए एक चिन्ह होगा।

तू अपनी बाईं करवट भी लेट, और इस्राएल के घराने का अधर्म उस पर रख; जितने दिनों तक तू उस पर लेटा रहेगा, उतने ही दिनों तक तू उनका अधर्म उठाए रहेगा। क्योंकि मैंने उनके अधर्म के वर्षों को दिनों की संख्या के अनुसार तुझ पर रख दिया है, अर्थात् तीन सौ नब्बे दिन; इस प्रकार तू इस्राएल के घराने का अधर्म उठाए रहेगा।

और जब तू इन्हें पूरा कर ले, तब फिर अपनी दाईं करवट लेटना, और तू यहूदा के घराने का अधर्म चालीस दिन तक उठाए रहेगा; मैंने तेरे लिये एक-एक दिन एक-एक वर्ष ठहराया है। इसलिए तू अपना मुख यरूशलेम की घेराबन्दी की ओर लगाए रखना, और तेरा बाँह उघड़ा हुआ रहे, और तू उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी करना। और देख, मैं तुझ पर बन्धन डालूँगा, और जब तक तू अपनी घेराबन्दी के दिनों को पूरा न कर ले, तब तक तू एक करवट से दूसरी करवट न बदल सकेगा। यहजेकेल 4:1-8।

चिह्न

“चिह्न” शब्द यहजेकेल की पुस्तक में नौ बार पाया जाता है। चौथे अध्याय में यरूशलेम का घेराव इस्राएल के घराने के लिए एक “चिह्न” है। बारहवें अध्याय में यहजेकेल फिर से एक “चिह्न” है, जो यरूशलेम के घेराव और विनाश को इंगित करता है।

हे मनुष्य के सन्तान, तू विद्रोही घराने के बीच में रहता है, जिनके देखने के लिए आंखें हैं, तौभी वे देखते नहीं; जिनके सुनने के लिए कान हैं, तौभी वे सुनते नहीं; क्योंकि वे विद्रोही घराना हैं। इस कारण, हे मनुष्य के सन्तान, तू अपने लिए स्थानान्तरित होने का सामान तैयार कर, और दिन में उनकी आंखों के सामने स्थानान्तरित हो; और तू अपनी जगह से दूसरी जगह उनकी आंखों के सामने चला जा; सम्भव है कि वे विचार करें, यद्यपि वे विद्रोही घराना हैं। फिर तू दिन में उनकी आंखों के सामने अपना सामान बाहर निकालना, जैसा स्थानान्तरित होने का सामान होता है; और सन्ध्या के समय तू उनकी आंखों के सामने निकल जाना, जैसे वे निकलते हैं जो बन्दी बनाकर ले जाए जाते हैं। उनकी आंखों के सामने दीवार में छेद करना, और उसी से अपना सामान बाहर निकालना। उनकी आंखों के सामने तू उसे अपने कन्धे पर उठाकर गोधूलि में बाहर ले जाना; तू अपना मुख ढांप लेना, ताकि तू भूमि को न देखे; क्योंकि मैंने तुझे इस्राएल के घराने के लिए एक चिह्न ठहराया है। यहजेकेल 12:2-6।

जब उस विद्रोही घराने ने उस अभिनयित दृष्टान्त को देखा, तब वे न समझ सके कि उसका क्या अर्थ है; इसलिए उन्होंने यहजेकेल से उसका अर्थ समझाने के लिए पूछा।

हे मनुष्य के सन्तान, क्या इस्राएल के घराने ने, उस विद्रोही घराने ने, तुझ से यह नहीं कहा, “तू क्या करता है?” उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: यह भार यरूशलेम के प्रधान और इस्राएल के सारे घराने के विषय में है जो उनके बीच में हैं। कह, मैं तुम्हारा चिह्न हूँ; जैसा मैं ने किया है, वैसा ही उनके साथ किया जाएगा; वे निकाल दिए जाएंगे और बन्धुआई में जाएंगे। यहजेकेल 12:9-11.

यरूशलेम की घेराबन्दी अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के लिए एक चिह्न है।

“प्राचीन भविष्यद्वाक्ताओं में से प्रत्येक ने अपने समय की अपेक्षा हमारे समय के लिए अधिक कहा, इसलिए उनकी भविष्यद्वाणियाँ हमारे लिए प्रभावी हैं। ‘अब ये सब बातें उन पर उदाहरण के लिये घटीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये लिखी गई हैं, जिन पर जगत का अन्त आ पहुँचा है।’ 1 Corinthians 10:11. ‘वे अपनी नहीं, परन्तु हमारी सेवा के लिये उन बातों की सेवकाई करते थे, जो अब उनके द्वारा तुम्हें बताई गई हैं जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया; उन बातों में स्वर्गदूत भी झाँकने की लालसा रखते हैं।’ 1 Peter 1:12....”

“बाइबल ने इस अंतिम पीढ़ी के लिए अपने खजानों को संचित किया है और एक साथ बाँध रखा है। पुराने नियम के इतिहास की सभी महान घटनाएँ और गंभीर व्यवहार इस अंतिम समय में कलीसिया में पुनः घटित हुए हैं, और हो रहे हैं।” Selected Messages, book 3, 338, 339.

उसी दिन

‘यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश’ के अभिनयात्मक दृष्टान्त में यहजेकल अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा के लिए एक चिन्ह है।

फिर नवें वर्ष में, दसवें महीने के दसवें दिन यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, और उसने कहा, हे मनुष्य के सन्तान, इस दिन का नाम लिख ले, अर्थात् इसी दिन का; क्योंकि बाबुल के राजा ने इसी दिन यरूशलेम के विरुद्ध अपना मोर्चा बाँधा है।

और उस विद्रोही घराने के विरुद्ध एक दृष्टान्त कह, और उनसे कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: हांडी चढ़ा, उसे चढ़ा, और उसमें जल भी डाल। उसके टुकड़े उसमें इकट्ठे कर, अर्थात् हर एक अच्छा टुकड़ा, जाँघ और कंधा; उसे उत्तम हड्डियों से भर दे। भेड़-बकरी के झुंड में से उत्तम को ले, और उसके नीचे हड्डियाँ भी जला, और उसे अच्छी रीति से खोलने दे, और उसकी हड्डियाँ भी उसी में पकने दे। इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता है: हाय उस खूनी नगर पर, उस हांडी पर जिसकी मैल उसमें है, और जिसकी मैल उसमें से निकली नहीं! उसके टुकड़े एक-एक करके बाहर निकाल; उस पर चिट्ठी न डाली जाए। क्योंकि उसका रक्त उसके बीच में है; उसने उसे चट्टान की नंगी चोटी पर रखा; उसने उसे भूमि पर नहीं उंडेला कि धूल से ढांपा जाए; इसलिये कि क्रोध भड़क उठे और प्रतिशोध लिया जाए; मैंने उसका रक्त चट्टान की नंगी चोटी पर रख दिया है, कि वह ढांपा न जाए।

इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है: हाय उस रक्तपात करनेवाले नगर पर! मैं तो अग्नि के लिए लकड़ियों के ढेर को बड़ा करूँगा। लकड़ी इकट्ठी करो, आग जलाओ, मांस को भस्म करो, उसे अच्छी रीति मसाला लगाकर पकाओ, और हड्डियों को जलने दो। तब उस पात्र को खाली करके उसके अंगारों पर रख दो, ताकि उसका पीतल तप जाए और जल उठे, और उसकी अशुद्धता उसी में पिघल जाए, और उसका मैल नष्ट हो जाए। वह अपने मिथ्या परिश्रम से थक गई, तौभी उसका बड़ा मैल उसमें से निकला नहीं; उसका मैल आग में ही रहेगा। तेरी अशुद्धता में दुष्ट कामुकता है; क्योंकि मैंने तुझे शुद्ध किया, पर तू शुद्ध न हुई, इसलिए अब तू अपनी अशुद्धता से फिर कभी शुद्ध न होगी, जब तक कि मैं अपना कोप तुझ पर शांत न कर लूँ। मैं यहोवा ने यह कहा है: यह होकर रहेगा, और मैं ही इसे करूँगा; मैं न पीछे हटूँगा, न दया करूँगा, और न पछताऊँगा; तेरे चालचलन और तेरे कामों के अनुसार वे तेरा न्याय करेंगे, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

फिर यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, और कहा, हे मनुष्य के सन्तान, देख, मैं एक ही आघात में तेरी आँखों की अभिलाषा को तुझ से ले लेता हूँ; तौभी तू न विलाप करना, न रोना, और न तेरे आँसू बहने पाएँ। चुपचाप कराहना; मेरे हुओं के लिए शोक न करना; अपने सिर की पगड़ी बाँधे रखना, और अपने पैरों में जूते पहने रखना; अपने होंठ न ढाँपना, और लोगों की दी हुई रोटी न खाना। तब मैं ने बिहान को लोगों से बात की; और साँझ को मेरी पत्नी मर गई; और दूसरे दिन बिहान को मैं ने वैसा ही किया जैसा मुझे आज्ञा दी गई थी। तब लोगों ने मुझ से कहा, क्या तू हमें न बताएगा कि ये बातें हमारे लिये क्या अर्थ रखती हैं, जो तू ऐसा करता है?

तब मैंने उन्हें उत्तर दिया, यहोवा का वचन मेरे पास यह कहकर पहुँचा, इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: देखो, मैं अपने पवित्रस्थान को अपवित्र करूँगा, जो तुम्हारी शक्ति की महिमा, तुम्हारी आँखों की अभिलाषा, और तुम्हारे प्राण का दुलारा है; और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिन्हें तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार से गिरेंगे। और जैसा मैंने किया है, वैसा ही तुम भी करोगे: न तुम अपने होंठ ढांपोगे, न मनुष्यों की रोटी खाओगे। और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर होंगी, और तुम्हारी जूतियाँ तुम्हारे पैरों में; तुम न विलाप करोगे और न रोओगे; परन्तु तुम अपने अधर्मों में क्षीण होते जाओगे, और एक दूसरे के सामने कराहोगे। इस प्रकार यहजेकल तुम्हारे लिये एक चिन्ह है: उसने जो कुछ किया है, उसके अनुसार तुम भी करोगे; और जब यह घटित होगा, तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। यहजेकल 24:1-24.

यहजेकल एक चिन्ह है, जो यरूशलेम की आरंभिक घेराबंदी और अंतिम विनाश की, तथा उसके पश्चात् लौदीकिया की सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के सदस्यों की बंधुआई की पहचान कराता है।

“जब मसीह ने जैतून पर्वत की चोटी से नीचे दृष्टि डाली, तब उसने प्रत्येक कलीसिया में विद्यमान यही दशा देखी। ये चेतावनियाँ उन सब पर लागू होती हैं जो यरूशलेम के लोगों के पदचिह्नों पर चल रहे हैं, जिन्हें इतना महान

प्रकाश प्राप्त हुआ था। यह लोग हमारे सामने एक चेतावनी के रूप में हैं। इस हमारे समय में परमेश्वर की चेतावनियों को अस्वीकार करके मनुष्य यरूशलेम के पाप को दोहरा रहे हैं। प्रभु वह देखता है जो मानवीय कर्ता न तो देखता है और न देखना चाहता है—बैटल क्रीक में समस्त मानवीय युक्तियों का परिणाम। उसने वह सब कुछ किया है जो एक परमेश्वर कर सकता था। उसने लोगों की आँखों के सामने प्रकाश चमकाया है, ताकि उनके पाप उस सीमा तक न पहुँचें जहाँ पश्चात्ताप का अनुभव फिर नहीं किया जा सकता। परन्तु न्याय और धर्म के सिद्धान्तों से दीर्घकालीन विचलन की प्रक्रिया द्वारा मनुष्यों ने अपने आपको वहाँ पहुँचा दिया है जहाँ प्रकाश और सत्य, न्याय और दया, पहचाने नहीं जाते। यह मार्ग उनके स्वभाव का ही अंग बन गया है।” टेस्टिमोनीज़, खंड 8, 68.

अल्फा और ओमेगा के दो साक्षी

यहेजकेल को अलौकिक रीति से गूँगा कर दिया गया था, और उसे यह सूचित किया गया था कि जब यरूशलेम गिर जाएगा, तब वह फिर बोल सकेगा, और तब वह एक ‘चिन्ह’ होगा। यहेजकेल द्वारा अपनी पत्नी की मृत्यु पर शोक न करना घेराबंदी के आरम्भ में अल्फा-चिन्ह को सूचित करता था, और यरूशलेम के गिरने पर यहेजकेल का मुँह खोला जाना ओमेगा-चिन्ह था। विनाश तक की घेराबंदी का चिह्न उसके आरम्भ और अंत—दोनों में—दिया गया है। इसी दृष्टांत के भीतर, अल्फा और ओमेगा-चिन्ह के दूसरे साक्षी के रूप में यह प्रदर्शित किया गया है कि “यहेजकेल की आँखों की अभिलाषा” की मृत्यु अल्फा है, और लोगों की “आँखों की अभिलाषा” की मृत्यु उस अवधि का ओमेगा-चिन्ह है। डेढ़ वर्ष की उस अवधि में एक अल्फा और एक ओमेगा के दो साक्षी विद्यमान हैं। यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु ने सेना की बन्धुआई और रौंदे जाने का प्रतिनिधित्व किया, और यरूशलेम की ओमेगा-मृत्यु ने पवित्रस्थान के रौंदे जाने का प्रतिनिधित्व किया।

इस प्रकार यहेजकेल तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा; उसने जो कुछ किया है, उसी के अनुसार तुम भी करोगे; और जब यह घटित होगा, तब तुम जानोगे कि मैं प्रभु यहोवा हूँ। और हे मनुष्य के सन्तान, क्या उस दिन ऐसा न होगा जब मैं उनसे उनकी शक्ति, उनकी महिमा का आनन्द, उनकी आँखों की अभिलाषा, और जिस पर उनका मन लगा रहता है, अर्थात् उनके पुत्रों और उनकी पुत्रियों को, छीन लूँगा? और क्या उस दिन जो बच निकलेगा वह तेरे पास आकर तुझे यह बात अपने कानों से सुनाने न देगा? उस दिन जो बच निकला है उसके लिये तेरा मुँह खोल दिया जाएगा, और तू बोलेगा, और फिर गूँगा न रहेगा; इस प्रकार तू उनके लिये एक चिन्ह होगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। यहेजकेल 24:24-27.

छह मृत्युयाँ

यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु घेराबंदी के आरम्भ और यरूशलेम की मृत्यु को चिह्नित करती है, जो भविष्यवाणी में मसीह की दुल्हन है, और यह उस शीघ्र आने वाले रविवार-विधि को चित्रित करती है, जिसके पहले एक ऐसा काल आता है जिसका प्रतिनिधित्व घेराबंदी द्वारा किया गया है। घेराबंदी की अवधि और विनाश—ये दो पृथक्, यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से परस्पर संबद्ध, मार्गचिह्न हैं। घेराबंदी एक समयावधि है, और विनाश समय का एक बिन्दु है। विनाश वही रविवार-विधि है, जिसके पहले पशु की मूरत के गठन की अवधि आती है। पशु की मूरत की अवधि का समापन पशु की छाप के साथ होता है। जब यीशु ने मत्ती चौबीस में यरूशलेम के विनाश के चिन्ह की पहचान कराई, तब उन्होंने नूह के दिनों का भी उल्लेख किया।

परन्तु जैसे नूह के दिनों में था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आगमन भी होगा। क्योंकि जैसे जलप्रलय से पहले के उन दिनों में वे खाते-पीते, विवाह करते और विवाह में दिए जाते थे, उस दिन तक जब नूह जहाज़ में प्रवेश कर गया, और जब तक जलप्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक वे न समझे; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आगमन भी होगा। मत्ती 24:37-39.

नूह के दिनों में अनुग्रह-अवधि का द्वार बन्द कर दिया गया था, और इस प्रकार वह शीघ्र आने वाले रविवार-विधि का प्रतीक ठहरा, जिसका प्रतीक 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार का बन्द होना भी है। 1844 में 12-17 अगस्त के एक्सेटर

शिविर-सभा से आरम्भ होने वाली अवधि एक ऐसी भविष्यसूचक अवधि का प्रतिनिधित्व करती है जो एक बन्द द्वार तक ले जाती है।

नूह के दिनों में, नूह ने तीसरे स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व किया, और तीसरा स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 के बन्द द्वार तक पहुँचा। नूह के दिनों में, जो यीशु के अनुसार “मनुष्य के पुत्र के आगमन” के समान होंगे, प्रकाशितवाक्य चौदह के तीनों स्वर्गदूत बन्द द्वार तक ले गए। विलियम मिलर ने पहले स्वर्गदूत के सन्देश का प्रतिनिधित्व किया, और नूह के दिनों में उनका प्रतिरूप हनोक में पाया गया। यहूदा हनोक के सन्देश को मिलर के सन्देश के समांतर के रूप में पहचानता है।

और आदम से सातवीं पीढ़ी में उत्पन्न हनोक ने भी इनके विषय में यह भविष्यवाणी की थी, यह कहते हुए, देखो, प्रभु अपने पवित्र जनों की असंख्य सेनाओं के साथ आता है, ताकि सब पर न्याय करे, और उन सब अभक्तों को उनके सब अभक्ति के कामों के विषय में, जिन्हें उन्होंने अभक्ति से किया है, तथा उन सब कठोर बातों के विषय में, जो अभक्त पापियों ने उसके विरुद्ध कही हैं, दोषी ठहराए। यहूदा 1:14, 15.

मिलर के प्रथम स्वर्गदूत के संदेश ने “न्याय” की घोषणा की, जैसा कि हनोक के संदेश में प्रतिरूपित था। हनोक के आरम्भ को “आदम से सातवाँ” होने के रूप में चिह्नित किया गया है। मिलर का संदेश उत्तरी राज्य के विरुद्ध “सात कालों” के आगमन के साथ आरम्भ हुआ और समाप्त हुआ, और छियालिस वर्ष बाद तृतीय स्वर्गदूत 22 अक्टूबर, 1844 को पहुँचा, जब दक्षिणी राज्य के विरुद्ध “सात काल” पूरे हुए। हनोक और मिलर—जो न्याय-घड़ी के संदेशवाहक थे—दोनों का आरम्भ संख्या सात की पहचान के साथ हुआ। जो अवधि हनोक, अर्थात् सातवें, के साथ आरम्भ हुई, वह उन सात दिनों पर समाप्त हुई जिनमें पशु जहाज़ में प्रवेश करते रहे, जब तक कि द्वार अलौकिक रीति से बन्द न कर दिया गया। यीशु सदैव आरम्भ के द्वारा अन्त को प्रतिरूपित करते हैं।

हनोक से मतूशेलह उत्पन्न हुआ, और मतूशेलह से लामेक उत्पन्न हुआ। लामेक और मतूशेलह दूसरे स्वर्गदूत के संदेश का, और साथ ही मध्यरात्रि की पुकार के संदेश का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। मध्यरात्रि की पुकार बन्द द्वार तक आगे बढ़ी, और इस प्रकार उसका प्रतिनिधित्व मतूशेलह द्वारा किया गया, जो जलप्रलय के वर्ष मर गया। लामेक दूसरे स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिनिधित्व करता था, और लामेक जलप्रलय से पाँच वर्ष पहले मर गया। लामेक की मृत्यु से लेकर मतूशेलह की मृत्यु तक के वे पाँच वर्ष, जब द्वार बन्द हुआ, यह जकेल की दुल्हन की मृत्यु का प्रतिरूप थे, जिसने उस अवधि के आरम्भ को चिह्नित किया जो मसीह की दुल्हन की मृत्यु तक पहुँची, जिसका प्रतिनिधित्व मतूशेलह द्वारा किया गया है।

हनोक ने 1798 में आए प्रथम स्वर्गदूत का प्रतिरूप प्रस्तुत किया, लामेक ने 19 अप्रैल, 1844 को आए द्वितीय स्वर्गदूत का प्रतिरूप प्रस्तुत किया, और मतूशेलह ने एक्सेटर से 22 अक्टूबर, 1844 के बन्द द्वार तक की मध्यरात्रि की पुकार का प्रतिरूप प्रस्तुत किया, जिसका प्रतिरूप नूह द्वारा प्रस्तुत किया गया था। लामेक की मृत्यु से मतूशेलह की मृत्यु तक के पाँच वर्ष 587 BC से 586 BC तक के डेढ़ वर्ष का प्रतिरूप प्रस्तुत करते थे। लामेक से मतूशेलह तक के वे पाँच वर्ष 1448 से 1453 तक के पाँच वर्षों का प्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं।

31 अक्टूबर, 1448 को जॉन पलायोलोगोस की मृत्यु हो गई, और उसके भाई, कॉन्स्टैन्टाइन ग्यारहवें, (अंतिम कॉन्स्टैन्टाइन) ने पूर्वी रोम के सिंहासन पर आरोहित होने के लिए इस्लामी तुर्की सत्ता से अनुमति माँगी। 27 जुलाई, 1299 को उसका अधीन होना प्रकाशितवाक्य 9 की दूसरी एक सौ पचास वर्ष की अवधि की पूर्ति था, जो पद 10 में प्रस्तुत की गई है। जॉन पलायोलोगोस की मृत्यु के पाँच वर्ष बाद, उसका भाई कॉन्स्टैन्टाइन ग्यारहवाँ कॉन्स्टैन्टिनोपल की प्राचीरों पर मर गया, जब मेहमेद द्वितीय ने पूर्वी रोम के बीजान्टिन साम्राज्य को जीत लिया। मेहमेद, मुहम्मद का तुर्की रूपांतर है; अतः 632 में प्रथम मुहम्मद की मृत्यु, जिसने प्रकाशितवाक्य 9 की पहली एक सौ पचास वर्ष की भविष्यवाणी का आरम्भ किया, (जो पद 5 में स्थित है), और जो आठ सौ इक्कीस वर्ष बाद ‘मुहम्मद द्वितीय’ के हाथों अंतिम कॉन्स्टैन्टाइन की मृत्यु के साथ समाप्त हुई। अपनी मृत्यु से पाँच वर्ष पूर्व मुहम्मद ने रोम के पतन की भविष्यवाणी की थी, और वह मुहम्मद द्वितीय नामक तुर्क द्वारा पूर्ण की गई।

कॉन्स्टैन्टीन अंतिम, अर्थात् ग्यारहवें, की मृत्यु कॉन्स्टैन्टिनोपल के युद्ध में हुई, इस प्रकार उसने अपने भाई जॉन की मृत्यु से अपनी मृत्यु तक के पाँच वर्षों की पहचान स्थापित की। वे पाँच वर्ष पुत्र लामेक की मृत्यु से लेकर पाँच वर्ष बाद, जब जहाज़ पर द्वार बन्द हुआ, पिता मत्थूशेलह की मृत्यु तक के पाँच वर्षों द्वारा प्रतिरूपित किए गए थे। इस प्रकार, यहजेकेल की पत्नी की मृत्यु लामेक की मृत्यु द्वारा प्रतिरूपित की गई थी, और दोनों मिलकर 1448 में जॉन पलायोलोगोस की मृत्यु की गवाही देते हैं। इसके पश्चात् मत्थूशेलह की मृत्यु, मसीह की दुल्हन की मृत्यु और 586 BC में यरूशलेम के विनाश के साथ संगति रखती है, और ये दोनों मिलकर कॉन्स्टैन्टीन ग्यारहवें की मृत्यु के साथ संगति रखते हैं।

एक ऐसे भविष्यवाणी-काल के तीन साक्षी, जो एक मृत्यु से आरम्भ होकर एक मृत्यु पर समाप्त होता है, उस पशु की मूरत के निर्माण की उस अवधि का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हैं जो पशु की छाप पर आकर समाप्त होती है; और यह मिलरवादी इतिहास में मध्यरात्रि के पुकारे की घोषणा तथा हमारे वर्तमान इतिहास में उस पशु की मूरत के निर्माण, जो पशु की छाप पर समाप्त होता है, के साथ संगति रखता है। जब शीघ्र आने वाली रविवार-व्यवस्था में पशु की छाप पूरी हो जाएगी, तब भविष्यवाणी का “बोलना” उस प्रकार प्रकट होगा, जैसा यरूशलेम के नाश होने पर यहजेकेल अपनी ही इच्छा से “बोल” सकने में समर्थ हुआ था।

बोलते हुए

रविवार-विधि के समय, जिसका प्रतिरूप यरूशलेम के विनाश द्वारा दर्शाया गया है, संयुक्त राज्य अमेरिका की भविष्यवाणी-संबंधी वाणी इस प्रकार चिह्नित होती है कि झूठा भविष्यद्वक्ता अजगर के समान बोलता है।

और मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा; और उसके मेम्ने के समान दो सींग थे, और वह अजगर के समान बोलता था। प्रकाशितवाक्य 13:11.

रविवार के विधान के समय, बिलाम तीसरी बार अपनी गदही को मारता है, और तब वह गदही बोलती है।

तब यहोवा ने गदही का मुँह खोल दिया, और उसने बिलाम से कहा, मैंने तुझ से क्या किया है, कि तूने मुझे ये तीन बार मारा है? बिलाम ने गदही से कहा, क्योंकि तूने मेरा उपहास किया है; यदि मेरे हाथ में तलवार होती, तो अब तक मैं तुझे मार डालता। तब गदही ने बिलाम से कहा, क्या मैं तेरी वही गदही नहीं हूँ, जिस पर तू अपने होने के समय से आज के दिन तक चढ़ता आया है? क्या मेरी कभी तेरे साथ ऐसा करने की रीति रही है? उसने कहा, नहीं। गिनती 22:28-30।

झूठा भविष्यद्वक्ता रविवार की व्यवस्था के समय बोलता है, और इस्लाम भी रविवार की व्यवस्था के समय बोलता है। भविष्यवाणी की दृष्टि से दोनों ही झूठे भविष्यद्वक्ता हैं। रविवार की व्यवस्था के समय हबक्कूक का वह “दर्शन” जो ठहरा रहा, बोलता है।

क्योंकि यह दर्शन अभी नियत समय के लिए है, परन्तु अन्त में वह बोलेगा, और मिथ्या न ठहरेगा; चाहे उसमें विलम्ब हो, तौभी उसकी बाट जोहते रहो; क्योंकि वह निश्चय ही पूरा होगा, वह विलम्ब न करेगा। हबक्कूक 2:3.

हबक्कूक वह सच्चा भविष्यद्वक्ता है जो झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विपरीत बोलता है। हबक्कूक का ‘दर्शन’ पहले गूँगे रहे यहजेकेल के मुख के द्वारा बोलता है, जिसका मुख तब खोल दिया जाता है। परमेश्वर का मुख होने की प्रतिज्ञा यिर्मयाह को दी गई थी।

मेरा दुख क्यों नित्य बना रहता है, और मेरा घाव क्यों असाध्य है, जो अच्छा होना नहीं चाहता? क्या तू मेरे लिये सर्वथा मिथ्यावादी के समान, और ऐसे जल के समान होगा जो धोखा दे जाते हैं? इस कारण यहोवा यों कहता है, यदि तू फिर लौट आए, तो मैं तुझे पुनः स्थापित करूँगा, और तू मेरे सम्मुख खड़ा रहेगा; और यदि तू तुच्छ में से बहुमूल्य को निकाल लाए, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरी ओर फिरें, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना। यिर्मयाह 15:18, 19

संडे लॉ के समय, जब ज़कर्याह ने बोलकर यह पुष्टि की कि उसके पुत्र का नाम यूहन्ना रखा जाना है, तब उसकी नौ महीनों की गूंगापन की अवधि समाप्त हुई। ज़कर्याह उस अगुवाई का प्रतिनिधित्व करता था जो तीसरे स्वर्गदूत के वचन पर अविश्वास करती है, और यूहन्ना एलिय्याह आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता था—उस कलीसिया का, जो मसीह के द्वितीय आगमन का मार्ग प्रशस्त करेगी।

और जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, मैं यह किस रीति से जानूँ? क्योंकि मैं वृद्ध हूँ, और मेरी पत्नी भी बहुत अधिक आयु की है। तब स्वर्गदूत ने उत्तर देकर उससे कहा, मैं जिब्रीएल हूँ, जो परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित रहता हूँ; और मैं तुझे से बातें करने तथा तुझे यह शुभ समाचार सुनाने के लिये भेजा गया हूँ। और देख, तू गूंगा होगा, और उस दिन तक बोल न सकेगा, जिस दिन ये बातें पूरी होंगी, क्योंकि तू ने मेरी उन बातों पर विश्वास नहीं किया, जो अपने नियत समय पर पूरी होंगी।

और लोग जकरयाह की बात जोह रहे थे, और अचम्भा करते थे कि वह मन्दिर में इतनी देर क्यों लगा रहा है। पर जब वह बाहर आया, तो उनसे बोल न सका; तब उन्होंने समझ लिया कि उसने मन्दिर में कोई दर्शन देखा है; क्योंकि वह उन्हें संकेत करता रहा, और गूंगा बना रहा। लूका 1:18-22।

ज़करियाह याजकों की आठवीं श्रेणी का था।

यहूदिया के राजा हेरोदेस के दिनों में अबिय्याह के दल का एक याजक था, जिसका नाम जकरयाह था; और उसकी पत्नी हाखून की पुत्रियों में से थी, और उसका नाम एलिज़ाबेथ था। और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सब आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे। और उनकी कोई सन्तान न थी, क्योंकि एलिज़ाबेथ बाँझ थी, और वे दोनों बहुत वृद्ध हो चले थे। और ऐसा हुआ कि जब वह अपने दल के क्रम के अनुसार परमेश्वर के सामने याजकाई का कार्य कर रहा था, तब याजकाई की रीति के अनुसार उस पर यह चिट्ठी निकली कि वह प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। और धूप जलाने के समय लोगों की सारी भीड़ बाहर प्रार्थना कर रही थी। लूका 1:5-10।

सभी भविष्यद्वक्ता अन्तिम दिनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और जकर्याह मन्दिर में प्रवेश किया, जैसा कि यहजेकेल ने भी किया था। वह याजकों की आठवीं पारी का था, जो नूह के जहाज़ में उन आठ प्राणों के प्रतीक को चिह्नित करती है, जो पुराने संसार से नए संसार में गए। वह और उसकी पत्नी दोनों निर्दोष थे, परन्तु जकर्याह गब्रिएल के वचनों पर सन्देह करेगा। मिलेराइट आन्दोलन फिलाडेल्फियाई (निर्दोष) के रूप में आरम्भ हुआ, परन्तु 1856 में लौदीकियाई में परिवर्तित हो गया। अन्तिम दिनों में, स्वर्गदूत का सन्देश तीसरे स्वर्गदूत का सन्देश है, और जकर्याह के प्रति गब्रिएल का सन्देश तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश का प्रतिनिधित्व करता है, और साथ ही एलिय्याह के सन्देश का भी, जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला द्वारा निरूपित है।

और प्रभु का एक स्वर्गदूत उसे धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा दिखाई दिया। और जब जकरयाह ने उसे देखा, तो वह घबरा गया, और उस पर भय छा गया। परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे जकरयाह, मत डर; क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है; और तेरी पत्नी इलीशिबा तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न करेगी, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। और तुझे आनन्द और हर्ष होगा; और उसके जन्म के कारण बहुत से लोग आनन्दित होंगे। क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा, और न दाखमधु, न कोई मादक पेय पिएगा; और वह अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। और इस्राएल की सन्तानों में से बहुतों को वह उनके परमेश्वर प्रभु की ओर फेरेंगे। और वह एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में उसके आगे-आगे चलेगा, कि पितरों के हृदय सन्तानों की ओर फेर दे, और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की बुद्धि पर ले आए; ताकि प्रभु के लिये एक तैयार की हुई प्रजा को सिद्ध करे। और जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, मैं इसे किस प्रकार जानूँ? क्योंकि मैं वृद्ध हूँ, और मेरी पत्नी भी बहुत आयु की हो चुकी है। स्वर्गदूत ने उत्तर देकर उससे कहा, मैं जिब्राएल हूँ, जो परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित रहता हूँ; और मैं तुझे से बातें करने, और तुझे यह शुभ समाचार सुनाने के लिये भेजा गया हूँ। लूका 1:11-19।

जकरयाह ने संदेह किया कि आने वाले एलिय्याह का संदेश पूरा होगा।

देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलियाह को भेजूँगा; और वह पितरों का हृदय पुत्रों की ओर, और पुत्रों का हृदय उनके पितरों की ओर फेरगा, ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप से मारूँ। मलाकी 4:5, 6.

सिस्टर व्हाइट, यहजेकेल के नौवें अध्याय में अंकित मुहर लगाने के संदर्भ में, यह पहचान कराती हैं कि लौदीकिया की सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया के नेतृत्व को जकर्याह के अविश्वास द्वारा प्रतिरूपित क्यों किया गया था।

“जो वर्ग अपनी ही आत्मिक अधोगति पर शोकाकुल नहीं होता, और न ही दूसरों के पापों पर विलाप करता है, वह परमेश्वर की मुहर के बिना छोड़ दिया जाएगा। प्रभु अपने दूतों को, जिनके हाथों में संहार के हथियार हैं, यह आज्ञा देता है: ‘उसके पीछे-पीछे नगर के बीच होकर जाओ, और मारो: तुम्हारी आँख न तरस खाए, और न दया करो: वृद्ध और जवान, कुमारियों, छोटे बच्चों, और स्त्रियों सब का सर्वथा वध करो: परन्तु उस किसी मनुष्य के निकट न आना जिस पर चिह्न हो; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करो। तब उन्होंने उन वृद्ध पुरुषों से आरम्भ किया जो भवन के सामने थे।’”

“यहाँ हम देखते हैं कि कलीसिया—प्रभु का पवित्रस्थान—सबसे पहले परमेश्वर के क्रोध के प्रहार को अनुभव करने वाली थी। वे प्राचीन पुरुष, जिन्हें परमेश्वर ने महान ज्योति दी थी और जो लोगों के आत्मिक हितों के रक्षक के रूप में खड़े थे, अपने भरोसे के साथ विश्वासघात कर चुके थे। उन्होंने यह स्थान ले लिया था कि हमें पूर्वकाल के समान चमत्कारों और परमेश्वर की सामर्थ्य के स्पष्ट प्रकट होने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। समय बदल गया है। ये शब्द उनके अविश्वास को दृढ़ करते हैं, और वे कहते हैं: प्रभु न भलाई करेगा, न बुराई करेगा। वह अपनी प्रजा पर न्याय करने के लिए अत्यन्त दयालु है। इस प्रकार ‘शान्ति और सुरक्षा’ उन मनुष्यों की पुकार है जो फिर कभी अपनी वाणी तुरही के समान ऊँची करके परमेश्वर की प्रजा को उनके अपराध और याकूब के घराने को उनके पाप नहीं दिखाएँगे। ये गूँगे कुत्ते, जो भौंकना नहीं चाहते थे, वही अपमानित परमेश्वर के धर्मसंगत प्रतिशोध को अनुभव करते हैं। पुरुष, युवतियाँ, और छोटे-छोटे बच्चे सब के सब एक साथ नाश हो जाते हैं।” टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 211।

जकरयाह ने तीसरे स्वर्गदूत के संदेश पर संदेह किया, जो एलियाह का संदेश है, और जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के इतिहास के साथ-साथ विलियम मिलर के इतिहास की भी पुनरावृत्ति करता है।

पाँच महीने

एलिसाबेथ ने अपनी गर्भावस्था को पाँच महीने तक छिपाए रखा।

और उन दिनों के बाद उसकी पत्नी एलिसाबेथ गर्भवती हुई, और पाँच महीने अपने को छिपाए रखा, और कहा, प्रभु ने मेरे लिये इन दिनों में ऐसा ही किया है, जब उसने मुझ पर कृपादृष्टि की, कि मनुष्यों के बीच मेरी निन्दा दूर करे। और छठे महीने में स्वर्गदूत गब्रिएल परमेश्वर की ओर से गलील के एक नगर में, जिसका नाम नासरत था, भेजा गया। लूका 1:24-26।

जकरयाह याजकों के आठवें क्रम का था, जो उसके पुत्र यूहन्ना के आठवें दिन हुए खतने के साथ मेल खाता है, जब जकरयाह फिर से बोलेगा। वह और उसका पुत्र यूहन्ना उन आठ प्राणों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो नूह के जहाज़ पर थे, जिन्हें पाँच महीनों, अर्थात् एक सौ पचास दिनों तक, जलप्रलय के जल द्वारा लाई गई मृत्यु से छिपाकर सुरक्षित रखा गया था। गर्भावस्था के एक सौ पचास दिन और जलप्रलय के जल, प्रकाशितवाक्य 9 में उल्लिखित पाँच-पाँच महीनों की दो अवधियों के साथ मेल खाते हैं।

जकर्याह और उसका पुत्र यूहन्ना उस समय का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जब लौदीकिया की सातवीं कलीसिया आठवीं कलीसिया फिलादेल्फिया में संक्रमण करती है। जकर्याह की आठवीं पारी के दौरान उसकी सेवा से लेकर उसके पुत्र यूहन्ना के आठवें दिन के खतने तक, यह एक भविष्यसूचक अवधि का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें संख्या आठ आरम्भ और अन्त की पहचान कराती है। उस भविष्यसूचक अवधि के भीतर पाँच महीनों की एक अवधि है, जो छिपे

रहने के समय का प्रतिनिधित्व करती है।

भविष्यद्वाणी का “बोलना” शीघ्र आने वाले रविवार के कानून की पहचान कराता है; इसलिए ज़करयाह रविवार के कानून के समय बोलता है, जब उसका पुत्र खतना की क्रिया द्वारा प्रदर्शित रूप में मुहरबंद किया जाता है। उस इतिहास में, रविवार के कानून से पूर्व, जब ज़करयाह बोलता है, पाँच महीनों के अंत में, छठे महीने में मरियम एलीशिबा से मिलने आती है और पवित्र आत्मा एलीशिबा का अभिषेक करता है; एलीशिबा, जो एक स्त्री के रूप में परमेश्वर की कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती है, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से चार महीने पूर्व परमेश्वर की कलीसिया के अभिषेक का प्रतिनिधित्व करती है।

उन दिनों मरियम उठकर शीघ्रता से पहाड़ी प्रदेश में यहूदा के एक नगर को गई; और ज़करयाह के घर में प्रवेश करके एलीशिबा का अभिवादन किया। और ऐसा हुआ कि जब एलीशिबा ने मरियम का अभिवादन सुना, तो बालक उसके गर्भ में उछल पड़ा; और एलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। तब उसने ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा, स्त्रियों में तू धन्य है, और तेरे गर्भ का फल धन्य है। और यह मुझे कहाँ से प्राप्त हुआ कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आए? क्योंकि देख, जैसे ही तेरे अभिवादन का शब्द मेरे कानों में पड़ा, वैसे ही बालक मेरे गर्भ में आनन्द से उछल पड़ा। और धन्य है वह जिसने विश्वास किया; क्योंकि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गई थीं, वे पूरी होंगी। लूका 1:39-45.

पाँच महीनों के अंत में, एलीशिबा ने मरियम से “ऊँचे शब्द से” बात की, और गब्रिएल के संदेश पर मरियम के विश्वास की प्रशंसा की, जो अंतिम दिनों में तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है। एलीशिबा के पति ज़करयाह ने अविश्वास किया था, परन्तु मरियम ने नहीं। मरियम ने ज़करयाह के पाँच महीने बाद गब्रिएल का संदेश सुना, इसलिए तीसरे स्वर्गदूत में उसका विश्वास इस रूप में चिह्नित है कि वह पाँच महीनों के गुप्त संदेश के प्रकट किए जाने के बाद आता है। अंतिम दिनों में पाँच महीनों का गुप्त संदेश प्रकाशितवाक्य 9:5 के प्रथम पाँच महीने हैं। मरियम अंतिम दिनों की उस कलीसिया का प्रतिनिधित्व करती है जो तीसरे स्वर्गदूत के संदेश को स्वीकार करती है, जिसमें पाँच महीनों का एक विशेष उन्मोचन सम्मिलित है, जो बहुत शीघ्र आने वाली संडे लॉ के कथन के आगमन से ठीक पहले होता है, जो लगभग चार महीने बाद आता है।

मरियम की भेंट के मार्ग-चिह्नों पर, ज़करयाह और एलीशिबा द्वारा निरूपित पहले और दूसरे स्वर्गदूतों का आंदोलन, मरियम और यूसुफ द्वारा निरूपित तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन से जुड़ता है। ज़करयाह उस कलीसिया के एक पदाधिकारी का प्रतिनिधित्व करता है जिसने तीसरे स्वर्गदूत के संदेश पर अविश्वास किया, और बड़ई यूसुफ उस आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है जो स्वावलंबी कार्य द्वारा निरूपित है। एडवेंटवाद का अंत वैसे ही होता है जैसे उसका आरंभ हुआ था, और उसका आरंभ एक आंदोलन के रूप में हुआ था, न कि एक संगठित कलीसियाई संरचना के रूप में। एक लाख चवालीस हजार का आंदोलन, जिसका प्रतिनिधित्व यूसुफ, मरियम और मसीह करते हैं, मिलराइट आंदोलन का प्रत्यक्ष संबंधी है, जिसका प्रतिनिधित्व ज़करयाह, एलीशिबा और यूहन्ना करते हैं; और 1863 का अविश्वास ज़करयाह द्वारा निरूपित है। 1863 पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों के प्रति अविश्वास का प्रतिनिधित्व करता है, और तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन मरियम के विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है।

“स्वर्ग से उस पराक्रमी स्वर्गदूत की सहायता के लिए स्वर्गदूत भेजे गए, और मैंने ऐसी आवाज़ें सुनीं जो मानो सर्वत्र गूँज रही थीं, ‘उसमें से निकल आओ, हे मेरी प्रजा, ताकि तुम उसके पापों के भागी न बनो, और उसकी विपत्तियों में से कुछ तुम पर न आए। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है।’ यह संदेश तीसरे संदेश के साथ जुड़ते हुए उसका एक परिशिष्ट-सा प्रतीत हुआ, जैसे 1844 में मध्यरात्रि की पुकार दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ जुड़ गई थी। परमेश्वर की महिमा धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने वाले पवित्र जनों पर ठहरी रही, और उन्होंने निडर होकर अंतिम गंभीर चेतावनी दी, बाबुल के पतन की घोषणा करते हुए और परमेश्वर की प्रजा को उसमें से निकल आने के लिए पुकारते हुए, ताकि वे उसके भयानक दंड से बच सकें।” Early Writings, 277.

दो संदेशों का एक साथ मिलना उस घटना द्वारा प्रतिरूपित किया गया है जब मरियम ने एलीशिबा से भेंट की, और वह बिंदु तब आया जब छिपे हुए पाँच महीने प्रकट किए जाते हैं। वही वह बिंदु है जहाँ दो भविष्यवाणियाँ परस्पर जुड़ती हैं और साथ-साथ घोषित की जाती हैं। एक की घोषणा एलीशिबा द्वारा की गई थी और दूसरी की मरियम द्वारा। दो संदेशों का यह मेल उस समय की पहचान कराता है जब मध्यरात्रि का पुकार दूसरे स्वर्गदूत के संदेश से जुड़ा है, और यह मिल्लेराइट इतिहास में एक्सेटर शिविर-सभा में घटित हुआ।

एलिसाबेथ और फिर मरियम द्वारा अपनी-अपनी घोषणाएँ करने के पश्चात्, “मरियम उसके साथ कोई तीन महीने रही, और फिर अपने घर लौट गई।” लूका 1:56। एक्सेटर से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक की छियासठ दिनों की अवधि उन चार महीनों द्वारा प्रतिरूपित की गई है, जिनका समापन शीघ्र आने वाले रविवार-विधि के समय हुआ, जब जकरियाह ने वचन कहा। वे चार महीने मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की घोषणा की अवधि का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पाँच गुप्त महीनों के संदेश के पश्चात् आती है।

मिलेराइट इतिहास के दो संदेश प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के थे, और प्रथम स्वर्गदूत का संदेश एक समय-संबंधी भविष्यवाणी की पूर्ति द्वारा सामर्थ्ययुक्त किया गया था, जो पाँच महीनों की एक अवधि से आरंभ हुई थी, और जो 11 अगस्त 1840 को उसकी पूर्ति से दस दिन पहले तक आंशिक रूप से गुप्त रही, जैसा कि जोसाया लिच द्वारा प्रस्तुत किया गया। द्वितीय स्वर्गदूत के संदेश को सामर्थ्य प्रदान करने वाली बात 1843 की उस गलत भविष्यवाणी का संशोधन था, जो एक्सेटर कैम्प-मीटिंग में हुआ, जैसा कि सैमुएल स्नो द्वारा प्रस्तुत किया गया।

आधी रात की पुकार के द्विविध संदेश की उद्घोषणा उस छोटे काल के रूप में प्रस्तुत की गई है जो द्वार बंद होने से ठीक पहले था, जिसने नूह की कथा में पाँच महीने की ऐसी अवधि को उद्घाटित किया जो जहाज़ के अरारात पर्वत पर ठहरने के साथ समाप्त हुई। आधी रात की पुकार की उद्घोषणा की अवधि उन गुप्त पाँच महीनों के अनमुहरबंद होने के पश्चात् आती है, जो 11 अगस्त, 1840 से दस दिन पहले प्रकट हुए; और यह उस समय के भी पश्चात् आती है जब प्रभु ने 1843 के चार्ट पर उन प्रतीकों से अपना हाथ हटा लिया था जिन्हें उसने ढाँप रखा था। 1 अगस्त से 11 अगस्त तक के दस दिन, एक्सेटर से 22 अक्टूबर, 1844 तक के छियासठ दिनों के साथ संरेखित होते हैं, और यह द्विविध साक्ष्य इस बात की पहचान कराता है कि गुप्त पाँच महीनों का अनमुहरबंद होना, उस अशुद्ध उद्घोषणा के संशोधन के साथ जो प्रथम निराशा का कारण बनी, उसी समय घटित होता है जब मरियम छठे महीने में एलीशिबा से मिलती और उसका अभिवादन करती है।

रविवार-विधि के समय, संयुक्त राज्य अमरीका अजगर के समान बोलता है, इस्लाम का गदहा बोलता है, और हबक्कूक का दर्शन यिर्मयाह, जकर्याह और यहजेकेल के मुख के द्वारा बोलता है। रविवार-विधि के समय यहजेकेल एक चिन्ह है, इस प्रकार उस ध्वज का प्रतिनिधित्व करता है जो रविवार-विधि के समय उठाया जाता है। यहजेकेल में ‘चिन्ह’ शब्द के नौ उल्लेखों में से दो “सब्तों” को पवित्रीकरण के चिन्ह के रूप में पहचानते हैं, जो मनुष्यता के साथ दिव्यता के संयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परन्तु मैंने अपने नाम के निमित्त कार्य किया, ताकि वह अन्यजातियों के साम्हने, जिनके बीच वे थे, अपवित्र न होने पाए; उन्हीं की दृष्टि में मैंने अपने आप को उन पर प्रगट किया, जब मैं उन्हें मिस्र देश से निकालकर ले आया। इसलिए मैंने उन्हें मिस्र देश से निकलवाया और जंगल में ले आया। और मैंने उन्हें अपनी विधियाँ दीं, और अपने नियम उन पर प्रगट किए, जिनका पालन यदि कोई मनुष्य करे, तो वह उन्हीं के द्वारा जीवित रहेगा।

और मैंने उन्हें अपने सब्त भी दिए, कि वे मेरे और उनके बीच एक चिन्ह ठहरें, जिससे वे जानें कि मैं यहोवा हूँ जो उन्हें पवित्र करता है। परन्तु इस्राएल के घराने ने जंगल में मेरे विरुद्ध विद्रोह किया: वे मेरी विधियों पर न चले, और मेरे नियमों को तुच्छ जाना, जिन्हें यदि मनुष्य माने, तो उन्हीं के द्वारा वह जीवित रहेगा; और उन्होंने मेरे सब्तों को बहुत अपवित्र किया: तब मैंने कहा कि मैं जंगल ही में उन पर अपना प्रकोप उंडेल दूँगा, ताकि उन्हें भस्म कर डालूँ। परन्तु मैंने अपने नाम के निमित्त ऐसा किया कि वह अन्यजातियों के सामने अपवित्र न होने पाए, जिनकी दृष्टि के साम्हने मैं उन्हें निकाल लाया था। फिर भी मैंने जंगल में उनके विरुद्ध अपना हाथ उठाया कि मैं

उन्हें उस देश में न पहुँचाऊँगा, जो मैंने उन्हें दिया था, जहाँ दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, जो सब देशों की शोभा है; क्योंकि उन्होंने मेरे नियमों को तुच्छ जाना, और मेरी विधियों पर न चले, परन्तु मेरे सब्तों को अपवित्र किया; क्योंकि उनका मन अपनी मूर्तों के पीछे चला। तौभी मेरी आँख ने उन पर तरस खाया और उन्हें नाश करने से रोक लिया, और न मैंने जंगल में उनका पूरा अन्त किया। फिर मैंने जंगल में उनकी सन्तान से कहा, अपने पितरों की विधियों पर मत चलो, न उनके नियमों को मानो, और न उनकी मूर्तों से अपने आप को अशुद्ध करो: मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ; मेरी विधियों पर चलो, और मेरे नियमों को मानो, और उन्हें पूरा करो; और मेरे सब्तों को पवित्र मानो; और वे मेरे और तुम्हारे बीच एक चिन्ह ठहरेंगे, जिससे तुम जानो कि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। यहजकेल 20:9-20.

यहेजकेल एक लाख चवालीस हज़ार का ध्वजचिह्न प्रस्तुत करता है, और दिव्यता का मनुष्यता के साथ संयुक्त चिन्ह प्रभु के “विश्रामदिन” हैं। घेरेबंदी के प्रारम्भ में यहजकेल एक चिन्ह है, और यरूशलेम के विनाश के समय भी, जब वह एक ध्वजचिह्न के रूप में ऊँचा उठाया जाता है, वह चिन्ह है। घेरेबंदी के प्रारम्भ में, जो देखने और सुनने से इन्कार करते हैं, जो उसके “विश्रामदिनों” को अपवित्र करते हैं, वे भी एक चिन्ह हैं।

तब इस्राएल के पुरनियों में से कितने ही मेरे पास आए, और मेरे सामने बैठ गए। और यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा, यह कहते हुए, हे मनुष्य के सन्तान, इन पुरुषों ने अपनी मूर्तियों को अपने हृदय में स्थापित कर लिया है, और अपने अधर्म के ठोकर खिलानेवाले कारण को अपने सामने रख लिया है; क्या मैं किसी प्रकार उनसे पूछे जाने दूँ? इसलिए उनसे कह, और उनसे यह कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है: इस्राएल के घराने का हर वह मनुष्य जो अपनी मूर्तियों को अपने हृदय में स्थापित करता है, और अपने अधर्म के ठोकर खिलानेवाले कारण को अपने सामने रखता है, और भविष्यद्वक्ता के पास आता है—मैं, यहोवा, उसकी बहुत-सी मूर्तियों के अनुसार उसे उत्तर दूँगा; ताकि मैं इस्राएल के घराने को उनके ही हृदय में पकड़ लूँ, क्योंकि वे सब अपनी मूर्तियों के कारण मुझसे दूर हो गए हैं।

इस्राएल के घराने से कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: मन फिराओ, और अपनी मूर्तों से फिरो; और अपने सब घृणित कामों से अपना मुख फेर लो। क्योंकि इस्राएल के घराने में से, या उस परदेशी में से जो इस्राएल में परदेशी होकर रहता है, जो मुझ से अलग हो जाता है, और अपनी मूर्तों को अपने हृदय में स्थापित करता है, और अपने अधर्म की ठोकर खाने वाली वस्तु को अपने सामने रखता है, और किसी भविष्यद्वक्ता के पास मेरे विषय में पूछने के लिए आता है, उसको मैं, यहोवा, स्वयं उत्तर दूँगा। और मैं उस मनुष्य के विरुद्ध अपना मुख करूँगा, और उसे चिन्ह और लोकोक्ति बना दूँगा, और मैं उसे अपनी प्रजा के बीच में से नाश कर डालूँगा; तब तुम जानोगे कि मैं ही यहोवा हूँ। और यदि भविष्यद्वक्ता बहकाया जाए और कोई बात कहे, तो मैं यहोवा ने उस भविष्यद्वक्ता को बहकाया है; और मैं उस पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और उसे अपनी प्रजा इस्राएल के बीच में से नाश कर डालूँगा। और वे अपने अधर्म का दण्ड उठाएँगे; भविष्यद्वक्ता का दण्ड उसी के समान होगा जो उससे पूछने आता है; ताकि इस्राएल का घराना फिर मुझ से भटकने न पाए, और न अपने सब अपराधों से फिर अशुद्ध हो; वरन् वे मेरी प्रजा ठहरें, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है। यहजकेल 14:1-11।

नैशविल में, लौदीकियाई सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया के भीतर वे लोग जिन्होंने जकर्याह के समान अविश्वास किया; जिन्होंने “यह स्थिति ग्रहण कर ली थी कि हमें चमत्कारों और परमेश्वर की सामर्थ्य के प्रबल प्रकटीकरण की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, जैसा कि पूर्व दिनों में हुआ था,” जैसा कि 1840 से 1844 के द्वारा निरूपित है, उन्हें ऐडवेंटवाद के बाहर के लोगों द्वारा इस विषय में सामना करना पड़ेगा कि वे चेतावनी देने में क्यों असफल रहे। वे झूठे शांति और सुरक्षा के संदेश का “चिह्न” बन जाते हैं, जो बुद्धिमानों और मूर्खों के पृथक्करण को चिह्नित करता है, जैसा कि एक्सेटर कैम्प-मीटिंग में दो परस्पर-विरोधी तंबुओं के द्वारा निरूपित है। वे मूर्तिपूजा और विद्रोह का एक “चिह्न” धारण करते हैं, जबकि यहजकेल सच्चा भविष्यद्वक्ता-संबंधी चेतावनी-संदेश वहन करता है। घेरेबंदी के अंत में, जब यरूशलेम नष्ट कर दिया जाता है, जो रविवार के विधान का प्रतिनिधित्व करता है, तब विद्रोह का चिह्न पशु की छाप है और आज्ञाकारिता का चिह्न परमेश्वर की मुहर है।

रविवार-व्यवस्था के समय एडवेंटिज़्म के लिए कृपा-अवधि पूर्णतः समाप्त हो जाती है, और वहाँ धर्मियों तथा दुष्टों का एक चिन्ह है, जिसके द्वारा वे चिह्नित किए गए हैं। शीघ्र आने वाली रविवार-व्यवस्था पर कृपा-अवधि का समाप्त होना उस कृपा-अवधि के समाप्त होने का प्रतिरूप है जब मीकाएल खड़ा होता है, और वहाँ असंख्य जनसमूहों की मृत्यु का चिन्ह गोग और मागोग के द्वारा निरूपित किया गया है।

और जो यात्री देश में होकर निकलेंगे, जब कोई किसी मनुष्य की हड्डी देखेगा, तब वह उसके पास एक चिन्ह खड़ा कर देगा, जब तक कि गाड़ने वाले उसे हामोन-गोग की तराई में गाड़ न दें। और उस नगर का नाम भी हामोनाह होगा। इस प्रकार वे देश को शुद्ध करेंगे। यहजकेल 39:15, 16.

वाचा का चिन्ह यहजकेल के सैंतीसवें अध्याय में पहचाना जाता है, जहाँ सूखी हड्डियों की तराई में पड़ी हुई मृत हड्डियों को जीवन दिया जाता है और दो लकड़ियाँ एक कर दी जाती हैं। हड्डियों को इस्लाम के एक संदेश के द्वारा, जो चारों पवनों द्वारा निरूपित है, जीवन दिया जाता है; इस प्रकार वह 11 अगस्त, 1840 का प्रतिरूप ठहरता है। दो लकड़ियाँ एक में मिला दी जाती हैं, और इस प्रकार वे दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ मध्यरात्रि के पुकार के संदेश के संयोजन का प्रतिनिधित्व करती हैं। हड्डियाँ पहले स्वर्गदूत की सामर्थ्य-प्राप्ति हैं और दो लकड़ियाँ दूसरे स्वर्गदूत की सामर्थ्य-प्राप्ति हैं। इसके पश्चात् परमेश्वर के लोग उसके अंतिम दिनों के चुने हुए वाचा-जन होते हैं, जो यूहन्ना के द्वारा एक लाख चवालीस हजार के रूप में निरूपित किए गए हैं।

और मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा; वह उनके साथ अनन्तकाल की वाचा होगी; और मैं उन्हें स्थापित करूँगा, और उन्हें बढ़ाऊँगा, और अपना पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये स्थिर करूँगा। मेरा निवासस्थान भी उनके साथ होगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे। तब अन्यजातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल को पवित्र करता हूँ, जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये होगा। यहजकेल 37:26-28.

ईश्वर के वचन में दिव्यता और मानवता के संयोग को विविध प्रकार से निरूपित किया गया है, और उसका एक उदाहरण तब प्रकट होता है जब किसी मनुष्य के उच्चतर स्वभाव में स्थित “आत्मा का गढ़” परमेश्वर के पवित्रस्थान के गढ़ से संलग्न हो जाता है। जब स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष, जो परमेश्वर के गढ़ का प्रतिनिधित्व करता है, किसी मनुष्य के उच्चतर स्वभाव के गढ़ के साथ संयुक्त हो जाता है, तब परमेश्वर की प्रजा “पवित्र” की जाती है और वह “सदा सर्वदा उनके बीच वास” करता है।

सैंतीसवें अध्याय के पश्चात् यहजकेल अध्याय अड़तीस और उनतालीस प्रस्तुत करता है, जहाँ वह गोग और मागोग को मानवजाति के उस संघ के प्रतीक के रूप में संबोधित करता है, जो परमेश्वर की चुनी हुई वाचा-प्रजा के बाहर है। चालीसवें अध्याय में, सैंतीसवें अध्याय की वाचा-प्रजा को ऐसे मन्दिर के रूप में दर्शाया गया है जो सारी पृथ्वी को भर देता है। अध्याय अड़तीस से चालीस तक अन्तिम दिनों में परमेश्वर की वाचा-प्रजा के उदय को प्रकट करते हैं, जैसा कि 38 और 40 संख्याओं द्वारा निरूपित किया गया है।

हम इन बातों को अगले लेख में आगे जारी रखेंगे।